Gyanvividha, Vol.-2; Issue-4 (Oct.-Dec.) 2025 : PP-184-189

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-4 (Oct.-Dec.) 2025
Page No.-184-189
©2025 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

शुभश्री दास
शोधार्थी (हिंदी विभाग),
रांची विश्वविद्यालय, रांची.

Corresponding Author :

शुभश्री दास
शोधार्थी (हिंदी विभाग),
रांची विश्वविद्यालय, रांची.

भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

सारांश : ज्ञान परंपरा यह शब्द अपने आप में ही अत्यंत व्यापक, गहन और बहुआयामी है। भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध बौद्धिक परंपराओं का धरोहर है। जिसमें नैतिकमूल्य, आध्यात्मिक ज्ञान, सदभावना, उच्च आदर्श, मानवीयता, संस्कार-संस्कृति, निष्ठा, सत्य, मैत्री, वीरता आदि कई ऐसे तत्व है जो भारत को विश्व गुरु के रूप में प्रतिष्ठा करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा मे गणित, विज्ञान, चिकित्सा, धर्म, दर्शन, वास्तुशास्त्र, खोगलशास्त्र, ज्योतिर्विद्या, संगीत, कला, योग, दर्शन, धर्म, त्याग, तपस्या, लौकिक तथा पारलौकिक आदि सभी प्रकार के अद्भुत ज्ञान का भंडार है। चार वेद, अठारह पुराण, एकसोआठ उपनिषद, रामायण, महाभारत, गीता, तमाम बोध तथा जैन ग्रंथ आदि यह सब भारतीय ज्ञान परंपरा का आधारभूत ग्रंथ है। भारतीय ज्ञान परंपरा मानव जीवन को समग्र रूप से समझने और उसे संतुलित रूप से विकसित करने का मार्ग दिखाती है।

सात्विक गुणों का संचार तथा आत्मनिर्भरता और सम्मान के साथ जीना, उच्च मानवीय गुण युक्त मनुष्य बनाने पर भारतीय ज्ञान परंपरा बल दे रहा था। जिसमें विद्यार्थी समाज तथा अपने परिवार के प्रति निष्ठावान, कर्तव्य परायण एवं जिम्मेदार बन सके। तक्षशिला, नालंदा के अतिरिक्त विक्रमशिला, वल्लभी, पुष्पगिरी जैसे प्राचीन विश्व-विद्यालय में देश-विदेश से तमाम विद्यार्थी आकर यहां ज्ञान आरोहण कर रहे थे। जो भारतीय ज्ञान परंपरा की महत्व को दर्शाती है।

वैदिक काल में ज्ञान आरोहण की प्रक्रिया मुख्य रूप गुरुकुल में छात्रों की मानसिक और व्यावहारिक दक्षता को विकास किया जा रहा था। भारतीय ज्ञान पद्धति छात्रों को जीवन के कठोर अनुशासन सीखना, वस्त्र, आहार, समाज सेवा, चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व का निर्माण आदि के ऊपर केंद्रित था। भारतीय ज्ञान परंपरा अपने इन्हीं आत्मज्ञान शिक्षा के लिए दुनिया के सभी शिक्षा परंपराओं में से श्रेष्ठ तथा प्रेरणादाई है।

भारत में आधुनिक ज्ञान परंपरा का प्रारंभ ब्रिटिश शासन काल में प्रारंभ हुआ। अंग्रेजी भाषा के साथ-साथ पाश्चात्य शिक्षा पद्धति को हम

भारतीयों के ऊपर थोपा गया। फल स्वरुप हम धीरे-धीरे अपने जड़ से, अपने संस्कृति से दूर होते चले गए और पाश्चात्य संस्कृति सभ्यता को अपनाने लगे। जिससे हमारे नैतिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान घटती चली गई।

स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार ने पुनः अपने स्वयं के शिक्षा नीति को प्रतिष्ठा करने की कोशिश की। भारत के शिक्षा परंपरा में फिर से गुणवत्ता लाने के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के शासनकाल में कोठारी आयोग के रिपोर्ट पर आधारित प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति(New Education Policy) 1968 में बनी। उसके बाद 1986 में राजीव गांधी के शासनकाल में दूसरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनी। जिसे 1992 में संशोधित भी किया गया। तत्पश्चात मान्यवर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शासनकाल में तीसरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति(National Education Policy) 2020 को घोषित किया गया। NEP 2020 प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा को ही अनुसरण करके बनाई गई थी। । इस शिक्षा नीति का लक्ष्य विद्यार्थियों का चरित्र निर्माण, उच्च आदर्शों की प्रतिष्ठा, बौद्धिक तथा नैतिक विकास के साथ साथ स्वाभलंबी बनाना एवं वैश्विक कल्याण के प्रति प्रतिबद्ध कराना है।

आज का युग तकनीकी का युग है। आज का युग आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का युग है। आज कई तकनीकों का प्रयोग करके स्वयं, स्वयंप्रभा, शोधगंगा, शोधशुद्धि, शोध गंगोत्री आदि तमाम ऐसे संसाधनों को बनाया गया है। जिसके माध्यम से विद्यार्थी आसानी से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और कम से कम व्यय में अच्छे से अच्छे राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के प्रोफेसरों से शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। वस्तुत: एक प्रभावी शिक्षा का प्रसार भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक तकनीकी और कौशल के सम्मिश्रण से ही संभव है। अतः प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक प्रौद्योगिकी और तकनीकी के गठजोड़ से हम एक स्वच्छ और स्वस्थ शिक्षा पद्धति का निर्माण कर सकते हैं।

बीज शब्द - ज्ञान परंपरा, संस्कृति, आध्यात्मिकता, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, नैतिकता, तकनीकी।

प्रस्तावना :

जब जीरो दिया मेरे भारत ने दुनिया को तब गिनती आई
तारों की भाषा भारत ने दुनिया को पहले सिखलाई
देता न दशमलव भारत तो यूं चांद पर जाना मुश्किल था
धरती और चांद की दूरी का अंदाजा लगाना मुश्किल था । ।
जब वेदों की ध्वनि उठी तो चेतना ने दीप जलाए
योग, मंत्र और ध्यान से जीवन के रहस्य बतलाएं
चरक सुश्रुत की विद्या से चिकित्सा ने राह बनाई
जब भारत बोला वसुधैव तो सीमा रेखा मिट् पाई । ।
सभ्यता जहां पहले आई पहले जन्मी है जहां पर कला
अपना भारत वह भारत है जिसके पीछे संसार चला । ।

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत की धरोहर ही नहीं बल्कि वर्तमान और भविष्य की मार्गदर्शक भी है। यह हमें सिखाती है कि ज्ञान केवल जानकारी प्रदान नहीं कराती अपितु आत्मबोध और लोकहित की भावना भी जगाती है। आज जब हम आधुनिकता की दौड़ में अपनी पहचान खोते जा रहे हैं, तब भारतीय ज्ञान परंपरा हमें हमारी जड़ों से जोड़कर एक संतुलित और समृद्ध जीवन की प्रेरणा देती है। भारतीय ज्ञान परंपरा में वैज्ञानिक और दार्शनिक दृष्टिकोण का समन्वय है, जो हमें दुनिया को समझने और जीवन की चुनौतियों का सामना करने में मदद करता है। **"हमारी प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली जो प्राय मनसा, बाचा, कर्मणा पर आधारित थी। इसमें सदैव बालक के नैतिक, सामाजिक, बौद्धिक, आर्थिक, राजनीतिक, भावात्मक आदि विकास पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा था तथा आत्मनिर्भरता, सम्मान, सत्यता, नम्रता जैसे सनातन मूल्य के सूजन पर बोल दिया जा रहा था।"**[1] ब्रिटिश शासन

के दौरान भारतीय शिक्षण पद्धतियों में कई बदलाव किए गए। जिससे कि हमारे नैतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक मूल्य धीरे-धीरे घटता चला गया। शिक्षा केवल अर्थ उपार्जन की एक माध्यम बनकर रह गई थी। स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बनी। जो भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा प्रणाली में एकीकृत करने पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य नवीन तकनीकी और कौशल के माध्यम से छात्रों को भारतीय संस्कृति दर्शन और ज्ञान प्रणालियों से परिचित कराना है। जिससे छात्रों के सर्वांगीण विकास हो सके। इसलिए भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता आज भी सर्वोपरि है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का स्वरूप : भारतीय ज्ञान परंपरा प्राचीन काल से चलती आ रही शिक्षा पद्धति के क्रमिक विकास को दर्शाती है। यह परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन गहन सुदृढ़ परंपराओं में से एक है। **"भारतीय ज्ञान प्रणाली एक विशाल और प्राचीन ज्ञान का संचय है जिसे भारतीय सभ्यता संस्कृति द्वारा हजारों वर्षों में सनातन मूल्य द्वारा विकसित किया गया है"।**[2] भारतीय ज्ञान परंपरा अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक है। जिसमें ज्ञान, विज्ञान, गणित, धर्म, दर्शन, चिकित्सा, ज्योतिर्विद्या, योगआदि का अद्भुत समन्वय पाया जाता है। यह परंपरा प्राचीन ग्रंथों, पांडुलिपियों और मौखिक संचारों के रूप में उपलब्ध है। भारतीय ज्ञान परंपरा जीवन के नैतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक मूल्य पर केंद्रित होकर विनम्रता, सत्यता, सम्मान, अनुशासन, आत्मनिर्भरता, जनकल्याण जैसे मूल्य पर जोर देती है। भारतीय ज्ञान परंपरा विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण और मानव, प्राणी एवं प्रकृति के मध्य प्यार, सद्भावना और समन्वय बनाए रखने पर भी केंद्रित है। भारतीय ज्ञान परंपरा का उद्देश्य उच्च आदर्श और श्रेष्ठ मानवीयता युक्त व्यक्तित्व का निर्माण करना है। जिससे व्यक्ति के विकास के साथ-साथ समाज का भी विकास हो सके। वेद, पुराण, उपनिषद, रामायण, महाभारत, बौद्ध तथा जैन ग्रंथ आदि गुरुकुल शिक्षा के प्रमुख आधार स्तंभ है। भारत के तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी, उज्जैन यदि विश्व प्रसिद्ध शिक्षा एवं शोध के केंद्र थे। जहां पर अलग-अलग देशों से विद्यार्थी ज्ञान अर्जन के लिए आते थे। आर्यभट्ट, चरक, कणाद, बराहमिहिर, भर्तु हरी, शंकराचार्य, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, अरविंद घोष जैसे अनेक विद्वान महापुरुष ने भारत भूमि पर जन्म लेकर अपने ज्ञान से भारतीय ज्ञान परंपरा के विकास के हेतु अद्भुत योगदान दिया है।

आज भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रभाव विश्व स्तर पर देखा जा सकता है। योग, ज्ञान, आयुर्वेद और भारतीय दर्शन को आज विश्व भर में न सिर्फ सराह जा रहा है बल्कि उसे बड़े पैमाने पर अपनाया भी जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित करना इस बात का प्रमाण है कि भारतीय ज्ञान परंपरा आज वैश्विक स्तर पर स्वास्थ्य एवं चेतना को नई दिशा दे रहा है। आज आईआईटी, आईआईएम जैसे संस्थान भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक तकनीकी और विज्ञान के साथ जोड़कर इसके प्रचार प्रसार के लिए प्रयासरत है।

भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषताएं

वैदिक आधार और मौखिक परंपरा : भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रारंभ वेदों से मानी जाती है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से संबंधित ज्ञान संकलित है। यह ज्ञान श्रुति और स्मृति पर आधारित था। जिसे गुरु शिष्य परंपरा द्वारा मौखिक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी संप्रेषित किया गया है।

आध्यात्मिकता पर आधारित दृष्टिकोण : भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल उद्देश्य केवल भौतिक सुख सुविधा प्राप्त करना नहीं है अपितु आत्मा की शुद्धि और मोक्ष प्राप्ति भी रहा है। 'सत्यम शिवम सुंदरम'की भावना इस ज्ञान परंपरा का मूल आधार है। यहां ज्ञान को विज्ञान के साथ-साथ ब्रह्मविद्या का दर्जा प्राप्त है।

गुरु शिष्य परंपरा : भारत में ज्ञान अर्जन की पद्धति बहुत ही विशिष्ट रही है। गुरुकुलों में शिष्य अपने गुरु के सानिध्य में रहकर ज्ञान प्राप्त करते हैं। यह शिक्षा केवल किताबी नहीं होती थी बल्कि आचरण, व्यवहार और सेवा के माध्यम से भी दी जाती थी।

व्यावहारिक और नैतिक शिक्षा : भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान के साथ-साथ अचार, नीति, आदर्श और नैतिकता के

ऊपर भी शिक्षा प्रदान किया जा रहा था। जिसके माध्यम से विद्यार्थी उचित अनुचित का विचार तर्कसंगत कर पाते थे। इस परंपरा में एक अच्छे, चरित्रवान व्यक्तिव का निर्माण पर ध्यान दिया जाता था।

विविध विषयों का समावेश : भारतीय ज्ञान परंपरा अत्यंत व्यापक, गहन और विविध पूर्ण रही है। इसमें धर्म, दर्शन, विज्ञान, गणित, चिकित्सा, ज्योतिष, संगीत, नृत्य, व्याकरण, योग आदि सभी विधाओं का समावेश है। इसमें कई विचार और मत का भी समावेश है। जैसे सनातन मत, बौद्ध और जैन विचार, शंकराचार्य के विचार, स्वामी दयानंद सरस्वती और स्वामी विवेकानंद का शिक्षा दृष्टि आदि।

विश्व कल्याण की भावना : भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल उद्देश्य केवल स्वहित नहीं बल्कि 'वसुधैव कुटुंबकम'और 'सर्वे भवंतु सुखिनः' जैसे विचारों पर आधारित भी रहा है। यह ज्ञान परंपरा मानव तथा जीव मात्र के कल्याण के लिए प्रयुक्त होता रहा है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का महत्व

आध्यात्मिक, बौद्धिक तथा नैतिक ज्ञान का संचार।

- प्रभावशाली चरित्र का निर्माण में सहायक ।
- साहित्य, कला, संस्कृति, विज्ञान, चिकित्सा, योग तथा विभिन्न दर्शन का ज्ञान प्राप्त।
- शांति, प्रेम, सम्मान, मैत्री तथा सहिष्णुता जैसे उच्च मानवीय गुणों का निर्माण।
- प्रकृति, पर्यावरण, संरक्षण, सतत विकास और मानव कल्याण जैसे विषय पर जानकारी प्राप्त।
- आत्म साक्षात्कार और आत्मज्ञान की प्राप्ति, जो व्यक्ति को जीवन में शांति और संतुष्टि प्रदान करने में मदद करता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का विकास यात्रा : भारत एक प्राचीन और गौरवशाली सभ्यता संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है। भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रारंभ वैदिक काल से ही माना जा सकता है। वैदिक काल में ज्ञान आरोहण की प्रक्रिया छात्रों का गुरुकुल में प्रवेश औपचारिक समारोह 'दीक्षा' द्वारा किया जाता था। और शिक्षा पांच वर्ष की आयु में 'विद्यारंभ'नामक समारोह से आरंभ होती थी। 'उन्नयन'समारोह 8 से 12 साल की आयु के बीच शुरू होता था। गुरुकुल में शिक्षक के साथ ही शिष्य रहता था। यहां पर छात्र, शिक्षक के निरंतरित ध्यान और व्यक्तिगत निर्देशन के अनुसार कार्य करता था। इस प्रक्रिया में छात्रों की मानसिक, व्यावहारिक तथा आचरण, विचारों में कई बदलाव आते थे। भारतीय ज्ञान परंपरा के द्वारा विद्यार्थियों में आत्म सम्मान, आत्मविश्वास, आत्मसंयम, न्याय आदि गुणों का उदय होता था। जो उस के व्यक्तित्व को विकसित करने में सहायक थे।

बौद्ध और जैन धर्म के आगमन के दौरान बुद्ध और जैन ग्रंथों का अध्ययन करने के लिए सारनाथ विश्वविद्यालय अधिगम का एक बड़ा केंद्र बना। इस समय शिक्षा के प्रसार के लिए कई मठ और बिहारा भी स्थापित किए गए। भारतीय ज्ञान परंपरा के आधार पर यहां पर भी छात्रों को शिक्षा दिया जा रहा था।

मध्यकाल में मुख्य रुप से मुगलों के शासनकाल में लाहौर, दिल्ली, अजमेर, जौनपुर आदि में प्रसिद्ध शिक्षा केंद्र स्थापित किए गए। निचले स्तर पर गांव में पाठ शालाएं बनवाई गई। हिंदू पाठशालाओं की तरह मुसलमानों के लिए भी मदरसा खोले गए। हिंदू दर्शन शास्त्र पर आधारित शिक्षा प्रणाली यहां पर भी चलती रही।

भारत में आधुनिक ज्ञान परंपरा का प्रारंभ ब्रिटिश शासन काल में प्रारंभ हुआ। ईस्ट इंडिया कंपनी आरंभ में कुछ शिक्षित भारतीयों को चाहती थी जो भारत के प्रशासन के कार्य में उनकी सहायता कर सके। बाद में अंग्रेजी भाषा के साथ-साथ पाश्चात्य शिक्षा पद्धति को हम भारतीयों के ऊपर थोपा गया। फल स्वरुप हम धीरे-धीरे अपने जड़ से, अपने संस्कृति से दूर होते चले गए और पाश्चात्य संस्कृति सभ्यता को अपनाने लगे। जिससे हमारे नैतिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान घटती चली गई।

स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद सरस्वती तथा अरविंद घोष आदि मनीषियों ने भी भारतीय शिक्षा

पद्धति का आधार भारतीय ज्ञान परंपरा को ही माना है। इन सभी विद्वानों ने भारतीय ज्ञान परंपरा को केंद्र में रखकर कई शिक्षानुष्ठान भी स्थापित किए। जिससे हम भारतीय अपने मूल शिक्षा से अपने मूल संस्कृति से जुड़े रहे।

स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार ने पुनः अपने स्वयं के शिक्षा नीति को प्रतिष्ठा करने की कोशिश की। भारत के शिक्षा परंपरा में फिर से गुणवत्ता लाने के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के शासनकाल में कोठारी आयोग के रिपोर्ट पर आधारित प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति(New Education Policy)1968 में बनी। उसके बाद 1986 में राजीव गांधी के शासनकाल में दूसरा राष्ट्रीय शिक्षा नीति बने। जिसे 1992 में संशोधित भी किया गया। तत्पश्चात मान्यवर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शासनकाल में तीसरा राष्ट्रीय शिक्षा नीति(National Education Policy)2020 को घोषित किया गया। नई शिक्षा नीति के निर्माण के लिए जून 2017 में डॉक्टर के कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया। इस समिति ने 2019 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रस्ताव प्रस्तुत किया। NEP 2020 प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा को ही अनुसरण करके बनाई गई थी। इसमें प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा को ही आधार स्तंभ माना गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में बदलाव लाना तथा पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक तकनीकी और विज्ञान के साथ जोड़ने का एक नवीन एवं सार्थक पहल है। **"राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली को पुनः जागृत करने और इसे समकालीन आवश्यकताओं के साथ जोड़ने का प्रयास है। यह नीति भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शामिल करने पर बोल देती है।"**[3] वर्ष 2020 में केंद्र सरकार ने 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' को स्वीकार किया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के निर्माण के लिए जून 2017 में डॉ के. कस्तूरीरंगन के अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया था। इस समिति ने में 2019 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रस्ताव प्रस्तुत किया है। वर्ष 1968 और वर्ष 1986 के बाद स्वतंत्र भारत की यह तीसरी शिक्षा नीति है। इस शिक्षा नीति में छात्रों में रचनात्मक सोच, तार्किक निर्णय और नवाचारों की भावना को प्रसारित करने पर बोल दिया गया है। इस नीति का मुख्य उद्देश्य सभी को एक उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना और भारत को वैश्विक स्तर पर ज्ञान का महाशक्ति के रुप में स्थापित करना है। शिक्षा के विकास में शिक्षकों का अवदान महत्वपूर्ण और अतुलनीय है। **"इस नीति द्वारा शिक्षकों को सक्षम बनाने के लिए हर संभव कदम उठाए जाने की आवश्यकता है। जिससे वे अपने कार्य को प्रभावी रुप से कर सके।"**[4]

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रमुख प्रस्तावित परिवर्तन :

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत उच्च शिक्षण संस्थानों में सकल नामांकन अनुपात Gross Enrolment Ratio)को 26.3% (वर्ष 2018) से बढाकर 50% तक करने का लक्ष्य रखा गया है।
- शिक्षा के संरचना में बदलाव लाते हुए 10 + 2 प्रणाली को 5 + 3 + 3 + 4 प्रणाली से बदल दिया गया। जिससे 3 से 8 वर्ष की आयु के बच्चों को शामिल किया गया है।
- प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा या स्थानीय भाषा होनी चाहिए। और इससे कक्षा 8 या उससे ऊपर तक जारी रखने का सुझाव दिया गया है।
- छात्रों के रचनात्मक मूल्यांकन पर अधिक ध्यान दिया जाएगा।
- दिव्यांग बच्चों के लिए विशेष प्रावधान किए जाएंगे। जैसे की कोर्स विकलांगता प्रशिक्षण, संसाधन केंद्र और सहायक उपकरण आदि।
- शिक्षा में तकनीक का उपयोग बढ़ाया जाएगा। जैसे कि ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल उपकरण आदि।
- इस व्यवस्था के अधीन कक्षा 6 से ही शैक्षिक पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा को सम्मिलित कर दिया जाएगा और इसमें इंटर्नशिप की व्यवस्था भी दी जाएगी।

- छात्रों की प्रगति के मूल्यांकन के लिए मानक निर्धारक निकाय के रूप में "परख"नामक एक राष्ट्रीय आकलन केंद्र (National Assessment Centre)की स्थापना की जाएगी।
- विभिन्न उच्च शिक्षण संस्थानों से प्राप्त अंकों या क्रेडिट को डिजिटल रूप से सुरक्षित रखने के लिए एक एकेडमी बैंक आफ क्रेडिट दिया जाएगा। जिससे अलग-अलग संस्थानों में छात्रों के प्रदर्शन के आधार पर उन्हे डिग्री प्रदान की जा सके।
- नई शिक्षा नीति के तहत एमफिल कार्यक्रम को समाप्त कर दिया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है। यह नीति भारत की समृद्ध सांस्कृतिक बौद्धिक और दार्शनिक विरासत को शिक्षा प्रणाली में पुनर्स्थापित करने का प्रयास है। **"राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार भारतीय ज्ञान परंपरा का शिक्षा में आगमन शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों को न केवल अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से परिचित कराएगा। अपितु वर्तमान में संतुलित व्यवहार एवं सामाजिक सततता का अवबोध करने की और अग्रसर भी करेगा।"**[5] भारतीय ज्ञान परंपरा से हम हमारे प्राचीन, गौरवशाली सभ्यता, संस्कृति, परंपरा से परिचित तथा अनूप्रेरित हो सकते हैं। फलस्वरुप आज के इस आधुनिक युग में पाश्चात्य सभ्यता संस्कृति को अपना रहे नव युवक वर्ग पाश्चात्य प्रभाव से विमुख हो सकते हैं। समाज में बढ़ती अन्याय, अत्याचार, दुष्कर्म, शोषण के पीछे कहीं न कहीं नैतिक तथा आध्यात्मिक जीवन मूल्यों का अभाव भी कारण है। भारतीय ज्ञान परंपरा हमें नैतिक और आध्यात्मिक ज्ञान देने के साथ साथ एक अच्छे और आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण में विश्वास करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा विद्यार्थियों को चरित्रवान बनाते हुए जीवन की समस्या को समाधान करने का मार्ग दिखाती है। यह परंपरा समाज कल्याण के लिए प्रेरित भी करती है। इन सभी दृष्टि से भारतीय ज्ञान परंपरा संपूर्ण विश्व के लिए अतीत में भी महत्वपूर्ण था आज भी महत्वपूर्ण है और भविष्य में भी रहेगा। इसलिए भारतीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता सर्वोपरि है।

निष्कर्ष : भारतीय ज्ञान परंपरा हमारे समाज सभ्यता और संस्कृति का रक्षक है। यह परंपरा का महत्व आज वैश्विक स्तर पर देखा जा सकता है। भारतीय ज्ञान परंपरा को अनुसरण करके एक अच्छे, आदर्श और नैतिक मूल्य युक्त समाज का निर्माण किया जा सकता है। आज के 21वीं सदी में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस(AI) के इस दौर में भारतीय ज्ञान परंपरा और नवीन तकनीक के मिश्रण से एक ऐसी समृद्ध शिक्षा पद्धति को विकसित किया जा सकता है जो पूरे दुनिया के लिए विशिष्ट तथा प्रेरणादाई हो।

संदर्भ :

1. प्रो. गीता सिंह, भारतीय ज्ञान परंपरा की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में प्रासंगिकता, आरहत बहुविषयक अंतरराष्ट्रीय शिक्षा अनुसन्धान जर्नल, volume-IX, issue no.-1, jan-feb-2022
2. सोनू रजक और प्रोफेसर मो. फ्रेजअहमद, भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में ज्योतिबा फुले, डॉअंबेडकर और पेरियार के शैक्षिक दर्शन का समकालीन संदर्भ-एक समीक्षात्मक अध्ययन, द रिसर्च डायलॉग, वॉल्यूम- 3, इशू- नंबर 4, जनवरी, 2025
3. डॉ. मधु दुबे स्वर्णकार, भारतीय ज्ञान परंपरा एक परिचय, ए जी पब्लिशिंग हाउस, मध्य प्रदेश, 462047, पृष्ठ- 149-150
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन और विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, पृष्ठ -5
5. डॉ वीणा वाजपेई, भारतीय ज्ञान परंपरा की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में प्रासंगिकता, श्री विनायक पब्लिकेशन, आगरा, 282007, पृष्ठ- 19

•